पास्टर और अगुवों के कार्य

फ्रैंकलीन के नोट्स

यशायाह 5:13 इसलिए **मेरी प्रजा के लोग** अपनी **अज्ञानता** के कारण **बन्धुवाई** (उघाड़ना, नग्न किए जाना) में जाते हैं; उनके प्रतिष्ठित पुरुष भूखे मरते और उनके जनसाधारण प्यास से व्याकुल होते हैं।

होशे 4:6 **अज्ञानता** के कारण **मेरी प्रजा नाश** (मूर्ख ठहरना, असफल होना या बरबाद होना) हो जाती है।

- यह बहुत चिंता का विषय है और सब पास्टरों और सब अगुवों तथा सब विश्वासियों के लिए बड़ी चिंता का विषय होना चाहिए। क्योंकि :

शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। (2 कुरि. 11:14)
और केवल **चोरी करने** और **घात करने** और **नष्ट करने** को आता है। (यूहन्ना 10:10)
तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। (1 पतरस 5:8)

हमें चेतावनी मिली है : **शैतान को अवसर न दो।** (इफि. 4:27)
पाप न केवल शैतान को अवसर देता है बल्कि उसे वैध अधिकार भी देता है (लूका 22:31-32)

- यह प्रत्येक पास्टर, प्रत्येक अगुवे, और प्रत्येक शिक्षक की जिम्मेवारी है कि उनसे शिक्षा पा रहे लोगों को यह बताएं।

याकूब 3:1 हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।

प्रेरितों के काम 20:27-32 क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने को नहीं झिझका। 28 इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो, जिसके मध्य पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की उस कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लहू से मोल लिया है। (29) मैं जानता हूं, कि ... फाड़ खानेवाले भेड़िये तुम्हारे मध्य आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। (30) तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे मनुष्य उठ खड़े होंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी मेढ़ी बातें करेंगे। (31) इसलिये जागते रहो ...

1 पतरस 5:1-4 तुम में जो प्राचीन हैं, मैं ... उन्हें यह समझाता हूं कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है, रखवाली करो, और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर (3) और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो। (4) और जब प्रधान रखवाला प्रगट

होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो कभी नहीं मुरझाएगा। (देखें प्रकाशितवाक्य 3:11)

यदि आप वचन और उदाहरण द्वारा शिक्षा दे रहे हैं, तो आप परमेश्वर के लोगों को अंधकार से तथा उससे जो "चोरी और घात करने आता है" (यूहन्ना 10:10), छुड़ा लेगा और उन्हें स्वतंत्रता की महिमामय ज्योति और परमेश्वर की आशीषों में ले जाएगा।

यिर्मयाह 29:11-14 यहोवा कहता है कि मैं उन **योजनाओं** को जानता हूं जिन्हें मैंने **तुम्हारे लिए** बनाई हैं ऐसी योजनाएं जो **हानि** की नहीं परन्तु तुम्हारे **कुशल** की हैं, कि तुम्हें उज्जवल **भविष्य** और **आशा** दूं। [12] तब तुम मुझे **पुकारोगे** और मेरे पास आकर मुझ से **प्रार्थना** करोगे और मैं तुम्हारी **सुनूंगा।** [13] तुम मुझे **ढूंढ़ोगे** और **पाओगे** क्योंकि **सम्पूर्ण हृदय से मुझे ढूंढ़ोगे।** [14] यहोवा कहता है कि **मैं तुम्हें मिल जाऊंगा।"**

- अपनी हर संतान के लिए हमारे स्वर्गीय पिता के पास उनके कुशल की योजनाएं हैं। इब्रानी शब्द "शालोम" का अर्थ है - स्वास्थ्य, सम्पन्नता, शांति।
- और वे हानि की नहीं हैं - ऐसा कुछ नहीं जो बुरा है
- तुम्हें उज्जवल भविष्य और आशा देने के लिए - जिससे आपको अनंतता तक लंबा आशीषित जीवन मिले। जब आप इसे पहचान जाएँगे, तो फिर ...

[12] तब तुम मुझे **पुकारोगे** और मेरे पास आकर मुझ से **प्रार्थना** करोगे और **मैं तुम्हारी सुनूंगा।**

[13] **तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे क्योंकि सम्पूर्ण हृदय से मुझे ढूंढ़ोगे।**

[14] यहोवा कहता है कि **मैं तुम्हें मिल जाऊंगा।** उसका वायदा है।

अपने लिए उसकी योजनाओं को जानने, उनको प्राप्त करने और उनका आनंद उठाने के लिए, हमें अपने सम्पूर्ण हृदय से उससे प्रार्थना करनी चाहिए - उसको ढूँढना चाहिए - उसे देखना चाहिए।

यह हर एक पास्टर, हर एक अगुवे का काम है, उसका लक्ष्य है और जिम्मेवारी है - कि वह अपने लोगों की ऐसी अगुवाई करे ताकि वे "परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय से देखें"

यह हर एक बच्चे के लिए उसके माता पिता का लक्ष्य और जिम्मेवारी है।

प्रश्न है - "परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय से ढूँढने" की क्या प्रेरणा है?

इसका उत्तर यूहन्ना 3:16 में है :

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ...

हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया। 1 यूहन्ना 4:19

इसकी प्रेरणा प्रेम है। हमारी सारी शिक्षाएं, प्रशिक्षण और कार्य करने के सभी उद्देश्य अपने लोगों को यीशु मसीह के महान और बड़े प्रेम की ओर लाने के लिए होना चाहिए।

प्रेम ---> देता है ---> हमारे प्रेम का स्तर इस बात से पता चलता है कि हम कैसे और क्या देते है !

अपने आप को > अपना समय > अपना धन

जहां **तेरा धन** है वहां **तेरा मन भी लगा** रहेगा।

मत्ती 6:21

परमेश्वर का मन अपने धन -> अपने लोगों पर लगा रहता।

उसके धन का मूल्य इस बात से आँका जा सकता है कि उसने उसको खरीदने के लिए क्या दाम चुकाया है। (प्रकाशितवाक्य 5:9)

लूका 19:10 मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है। लोग!

प्रेम पीछे पीछे आता है -> अनुसरण करने का स्तर हमारे प्रेम से निर्धारित होता है।

जितना अधिक आप अपने लोगों को प्रभु यीशु के पास उससे प्रेम करने के लिए लाएंगे, **उतना ही अधिक वे अपने सम्पूर्ण मन से उसका पीछा करेंगे।**

बहुत आवश्यक बात :

- पास्टर और अगुवे होने के नाते हमें यह पहचानना है कि **केवल प्रेम हमें इस बात के योग्य ठहराता है कि हम परमेश्वर के झुंड की रखवाली करें।**

यूहन्ना 21:15-17 भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है? उस ने उस से कहा, "हां प्रभु तू तो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं।" उस ने उस से कहा, मेरे मेमनों को चरा। (16) उस ने फिर दूसरी बार .... क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? ... मेरी भेड़ों की रखवाली कर। (17) उस ने तीसरी बार उस से कहा, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? ... मेरी भेड़ों को चरा।

प्रेम पास्टरों की और शिक्षा देने की प्रेरणा होनी चाहिए।

जितना अधिक आप अपने लोगों को प्रभु यीशु के पास उससे प्रेम करने के लिए लाएंगे, **उतना ही अधिक वे अपने सम्पूर्ण मन से उसका पीछा करेंगे।**

यहाँ एक अच्छा उदाहरण है :

लूका 7: 36-50 फरीसी और पापिन स्त्री

पद 36-38 **उसने ऐसा क्यों किया? वह प्रभु से प्रेम करती थी।**

- उसने विश्वास किया कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीहा है।
- उसने जाना कि वह पापी है
- वह जानती थी कि जो कुछ वह **दे** और **कर** रही है, यीशु उस सब के योग्य है।

उसके प्रेम ने उसके कार्य को प्रेरित किया और उसे इन बातों की ओर अंधा कर दिया

- (1) इस बात का भय कि उसके बारे में लोग क्या सोचेंगे।

सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है। 1 यूहन्ना 4:18

और (2) धन, वस्तुओं और भविष्य के प्रबंधों की चिंता या उनके प्रति प्रेम।

- **वह केवल एक से प्रेम करती थी और उसी को देख रही थी - प्रभु यीशु मसीह**

पद 39-46

इसमें इन बातों का विरोधाभास है : (1) एक कठोर, धार्मिक हृदय और (2) एक प्रेम करनेवाला धन्यवादी हृदय जो आराधना, समय, और धन देता है।

पद 47-50 ... उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है।

यीशु के प्रति उसके प्रेम की प्रेरणा उसका विश्वास था।

प्रेम द्वारा विश्वास कार्य करता है। गलतियों 5:6 तथा याकूब 2:20, 26

- **जितना हमारा विश्वास बढ़ता है - उतना ही हमारा प्रेम भी बढ़ता है**

- जितना अधिक हम यह जानते हैं कि हम कितने पापी हैं, उतने अधिक हम आभारी होते हैं, और **उतना ही अधिक यीशु के लिए हमारा प्रेम बढ़ जाता है**

- **प्रेम द्वारा प्रेरित होकर - विश्वास और कर्म एक साथ कार्य करते हैं।** याकूब 2:20, 26

सबसे महत्वपूर्ण और प्राथमिक बात यह है - >
यीशु के प्रति हमारा प्रेम

पास्टर अपने लोगों के बीच में जो भी चिंता या समस्या का सामना करता है, यीशु का प्रेम उन सब बातों का समाधान करता है।

और यीशु के प्रति हमारा प्रेम इस बात से निर्धारित होता है कि

(1) कितनी स्पष्टता से हम उसके क्रूस और उसके उस प्रेम को देखते हैं जो उसे वहां ले गया और जिसके कारण वह हमारे पापों की क्षमा के लिए वहां टंगा रहा।

(2) और हम अपने पाप को कितनी स्पष्टता से देखते हैं।

यीशु के प्रति हमारे प्रेम का माप इस बात पर निर्धारित होता है :

1. हम कितने पश्चातापी हैं। (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)
   (हम कितने पाप से मन फिराते हैं और यीशु के पास क्षमा के लिए आते हैं)
2. दूसरों के समक्ष हम कितने निर्भीक हैं। (वह बहुत निर्भीक थी)
3. हमारी आराधना कितनी अधिक है। (उसकी आराधना बहुत अधिक थी)
4. **हम कितना अधिक देते हैं**

हमारा प्रेम कितना अधिक है यह - **> हमारे देने** से मालुम पड़ता है

जिस तरह से कोई आराधना और सराहना में **दान देता** हैं, उसे देखकर आप बता सकते हैं कि वह एक आभारी पापी है

दूसरों के प्रति हमारे प्रेम/ हमारी सराहना का पता इस बात से चलता है कि हम उनके लिए क्या करते हैं।

प्रभु ... और ... अपने पति / पत्नी, दोनों के लिए

मत्ती 7:20 आप उन्हें उनके फल से जानेंगे।

जब हम यह समझने में लोगों की सहायता करते हैं कि यीशु उनसे कितना प्रेम करता है - और वे कितने अधिक मूल्यवान हैं - तो वे परमेश्वर को ढूंढेंगे।

1 यूहन्ना 4:19 हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहिले हमसे प्रेम किया।

अत: प्रश्न है : वह हमसे कितना प्यार करता है।

फिलिप्पियों 2:2-11

कुलुस्सियों 2:13-15

2 कुरिन्थियों 5:18 - 21

प्रकाशितवाक्य 5:9

यशायाह 53

पवित्र आत्मा की अगुवाई में उन्हें धीरे धीरे और गहराई में सिखाएं।

जितना हम इस बात को समझते हैं, उतना ही यह हमारे मन और मस्तिष्क पर छा जाता है, और हम परमेश्वर को ढूंढेंगे और उससे प्रेम करेंगे।

2 कुरिन्थियों 5:14-15 क्योंकि **मसीह का प्रेम हमें नियंत्रित करता है** (हम पर छा जाता है, विवश करता है) जिस से यह **निष्कर्ष निकलता** है (हमें इस निष्कर्ष पर आना ज़रूरी है) कि जब एक सब के लिए

मरा, तो सब मर गए। [15] और वह सब के लिए मरा कि वे जो जीवित हैं आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जीएं, जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा।

यह हर एक पास्टर और अगुवे के लिए चुनौती है, लक्ष्य है - कि वह वो सब करे जिससे उसके लोग यीशु के प्रेम के लिए अपने हृदयों को खोल सकें। यह शिष्य बनाने का कार्य है।

यिर्मयाह 29:13 तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे क्योंकि **सम्पूर्ण हृदय से मुझे ढूंढ़ोगे।** [14] यहोवा कहता है कि **मैं तुम्हें मिल जाऊंगा।**"

बहुत कम विश्वासी "सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर को ढूंढते हैं"।

क्यों ?

क्योंकि पास्टर और शिक्षक के रूप में हमारा केन्द्रण एक मुख्य बात पर नहीं है

-> प्रेम

1 कुरिन्थियों 13 पद 8 प्रेम कभी टलता नहीं पद 13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम थे तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का उदाहरण :

यूहन्ना 1:35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से **दो जन** खड़े हुए थे।

पद 1 **केवल दो शिष्य** ! यूहन्ना ने तो बहुत से लोगों को बपतिस्मा दिया था (लूका 3:10)

दो ही क्यों ??? बाकी कहाँ थे ???

इन दो शिष्यों के लिए, उनकी **प्रथम प्राथमिकता** यीशु मसीह को ढूँढने तथा उसके बारे में और अधिक जानने की थी।

यीशु ने हमें बीज बोनेवाले के दृष्टांत में बताया कि **क्यों केवल थोड़े ही लोग होते हैं :** मरकुस 4:19 से आगे

बीज = परमेश्वर का वचन और चार प्रकार के लोग :

- मार्ग के **किनारे** - **शैतान** तुरंत आकर वचन को उठा ले जाता है

- **पत्थरीली** भूमि - **क्लेश** या **उपद्रव** होता है और तुरंत गिर जाते हैं।
- **कँटीली** झाड़ी - संसार की **चिंता**, **धन** का धोखा और **वस्तुओं** का लोभ (**सुख विलास** लूका 8:14) वचन को दबा देता है।
- **अच्छी भूमि** - वचन सुनकर ग्रहण करते हैं, **फल लाते** हैं, 30, 60, और 100 गुना।

चिंताएं : वचन को दबा देती हैं मत्ती 6:25-33 इस कारण मैं तुमसे कहता हूं कि अपने प्राण के लिए यह **चिन्ता न करना** कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे; और न ही ... कि क्या पहिनेंगे। [31] इसलिए यह कह कर **चिन्ता न करो**, .. पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। [33] परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो **ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।**

फिलिप्पियों 4:6-7 **किसी भी बात की चिन्ता न करो**, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती **धन्यवाद** के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए। (7) तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे **हृदय** और तुम्हारे **विचारों** को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

तीतुस 2:11-12 क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, ... और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और **सांसारिक अभिलाषाओं** से मन फेरकर इस युग में **संयम** और **धर्म** और **भक्ति** से जीवन बिताएं।

धन : वचन को दबा देता है लूका 16:1, 10 - 15 तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
1 तीमुथियुस 6:9 पर जो **धनी** होना **चाहते** हैं, वे ऐसी **परीक्षा**, और **फंदे** और बहुतेरे व्यर्थ और **हानिकारक लालसाओं** में फंसते हैं, जो मनुष्यों को **बिगाड़** देती हैं और **विनाश** के समुद्र में डूबा देती हैं।

इब्रानियों 13:5 तुम्हारा स्वभाव **लोभरहित** हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर **संतोष किया करो**
1 तीमुथियुस 3:3; 6:10

वस्तुएँ / सुख विलास (लूका 8:14) वचन को दबा देते हैं

1 यूहन्ना 2:15 तुम न तो संसार से और न संसार में की **वस्तुओं** से प्रेम रखो

1 तीमुथियुस 6:8 यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर **सन्तोष करना** चाहिए।

पौलुस का हृदय : फिलिप्पियों 3:7-9 परन्तु जो जो **बातें** मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण **हानि** समझ लिया है। (8) वरन मैं अपने **प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता** के कारण **सब**

बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से **मैं मसीह को प्राप्त करूं ।** (9) और उस में (या उसके साथ) पाया जाऊं

अपने एक भजन "when I survey the wondrous cross" में आइसैक वाट्स इन "बातों" के जाल को पहचानते हुए लिखते हैं : ऐसा न हो कि मैं घमंड करूँ - सिवाय अपने राजा मसीह की सलीब में - और **जो कुछ व्यर्थ बातें मुझे लुभाती हैं - उन्हें मैं दूर करके, सिर्फ क्रूस से लिपटा रहता हूँ।**

- यह समस्या है - जो बातें लुभाती हैं ... जो हमारा समय और ध्यान आकर्षित करती हैं

यह हृदय / प्राथमिकताओं / का मामला है, जो आपके लिए महत्व को रखती है।

क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। मत्ती 6:21

यही कारण है कि क्यों हमेशा > केवल कुछ ही होते हैं

लूका 17:11-19 क्या दसों शुद्ध न हुए तो फिर वे नौ कहां हैं?

- वे नौ जन यीशु के साथ सम्बन्ध बनाने को नहीं बल्कि केवल अपनी चंगाई के बारे में चिंतित थे। केवल एक बात जो वे चाहते थे वह थी कि वे चंगे हो जाएं।
- कितनी बार ऐसा होता है कि हम आशीषें प्राप्त करके आनंद से अपने मार्ग में चले जाते हैं।

यीशु ने विशाल जनसमूह को शिक्षा दी > परन्तु उन में से कौन वास्तव में उसके पीछे आए?

यूहन्ना 6:2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि वे उन को आश्चर्यकर्म देखते थे जो वह बीमारों पर दिखाता था।

यूहन्ना 6:26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्यकर्म देखे हैं, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।

उसने बारह शिष्यों को बुलाया - परन्तु कुछ शिष्य दूसरों की तुलना में यीशु के अधिक निकट थे।

12 शिष्यों में से **> 3** शिष्य बाकी शिष्यों से अधिक यीशु के पीछे चले

इन **3** शिष्यों में से **> 1** ऐसा था जो बाकी से अधिक यीशु के पीछे चला : **यूहन्ना 13:21 +**

यूहन्ना के **इन दो शिष्यों** के लिए - उनकी इच्छा / बाकी वस्तुओं से पहले उनकी प्राथमिकता / उनकी भूख और प्यास **>**

उसे और अधिक घनिष्ठता से **जानने** की थी !

बार बार समय समय पर यीशु ने हमसे प्रतिज्ञा की :

व्यवस्थाविवरण 4:29	परन्तु वहां तुम अपने परमेश्वर यहोवा की **खोज करोगे**, और यदि तुम **अपने सारे मन और अपने सारे प्राण** से उसकी खोज करो तो वह तुम को मिल जाएगा।
1 इतिहास 22:19	अब तू अपने **हृदय और प्राण को** अपने परमेश्वर यहोवा की **खोज** में लगा;
2 इतिहास 12:14	उसने वह कार्य किया जो बुरा है, अर्थात् उसने अपने मन को यहोवा की **खोज** में न लगाया।
भजन संहिता 34:10	यहोवा के **खोजियों** को किसी भली वस्तु की घटी न होगी।
भजन संहिता 105:4	यहोवा और उसके सामर्थ्य को **खोजो**; निरन्तर उसके दर्शन के **खोजी** बने रहो।
नीतिवचन 28:5	जो यहोवा की **खोज** में रहते हैं, वे सब कुछ **समझते** हैं।
यशायाह 55:6	जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी **खोज** में रहो, **जब तक वह निकट है** तब तक उसे **पुकारो।**

वह अभी आप के बहुत निकट है ! दिन प्रति दिन
वह जा रहा है .. क्या आप उसके पीछे जाएँगे या कँटीली झाड़ियों में उलझे रहेंगे? यह एक परीक्षा है (कि आप किससे अधिक प्रेम करते हैं) **>** एक अवसर **>** आप क्या करेंगे?

यूहन्ना 1:36-37 और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेमना है।" (37) तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर **यीशु के पीछे हो लिए।**

यह शिष्यता है **>** यीशु को खोजने और अनुसरण करने के लिए हृदयों को तैयार करना

यूहन्ना 1:38 यीशु ने मुड़कर उन्हें अपने पीछे आते देखा और उनसे कहा, "**तुम किसकी खोज में हो?"** उन्होंने कहा, "हे रब्बी (अर्थात् हे गुरु), तू कहाँ रहता है?"

- और यीशु ने मुड़कर - आप इस प्रकार उसका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध को खोजने, बनाने और पीछा करने की चाह रखना शुरू करें। उसके पीछे हो लें।

- वे यीशु के आमने सामने / आँखों के सामने। यह कैसा होगा?

- और यीशु ने उनसे एक प्रश्न किया - यही प्रश्न वह हम से बार बार पूछता है :
  तुम किसकी खोज में हो? - तुम क्या ढूँढ रहे हो?
  आपको क्या चाहिए / आपकी क्या इच्छा है?

  - वह आपका ह्रदय देखता है। आपको उसे सच सच बताना चाहिए

- उनके पास एक अच्छा जवाब था - तू कहाँ रहता है? वे **उसके साथ** रहना चाहते थे / उसके साथ **बसना** चाहते थे।
  - यूहन्ना 15:7 **यदि** तुम **मुझ में बने रहो** और **मेरा वचन** तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो ... इस तरह हमें अपनी प्रार्थनाओं का जवाब मिलता है !

  - क्योंकि : **वह ... अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।** इब्रानियों 11:6

आपकी इच्छा क्या है?

आप किसका अनुसरण कर हैं ?

आपको किसकी धुन है?

कार्य करने के लिए आप किससे प्रेरित होते हैं?

लोगों को जिस भी बात की धुन होगी, उसी बात का अनुसरण करेंगे

1. **यूहन्ना 17:24** **यीशु** की धुन / प्रेरणा

2. **लूका 10:38-42** मार्था : बहुत सी **बातों से विचलित - चिंतित - व्याकुल हो गयी** - कँटीली झाड़ी। मरियम "केवल एक बात"

3. **भजन संहिता 27:4** **दाऊद** की धुन :
   प्रेरितों के काम 13:22 मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है, वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।

4. **निर्गमन 33:7-11** यहोशु की **धुन** : पर यहोशू नामक एक जवान, .. तम्बू से बाहर न निकलता था।

मूसा के साथ मिस्र से निकले सभी जवानों में, केवल एक ऐसा था जो सचमुच परमेश्वर की बातों के पीछे चलता था :

- सभी जवानों में, केवल एक था - जिसने केवल एक ही बात ... की इच्छा रखी।
- अन्य लोग क्यों नहीं थे?

2 तीमुथियुस 3:1-5 पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे। (2) क्योंकि मनुष्य **स्वार्थी**, **लोभी**, ... **निन्दक ... कृतघ्न, अपवित्र**, (3) **दयारहित, ... असंयमी** ... (4) ... और **परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे।**

2 इतिहास 16:9 देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है **कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है**, उनकी **सहायता** में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए।

यूहन्ना 1:39 उसने उनसे कहा, "आओ और देख लो।" तब उन्होंने जाकर उसके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उसके साथ रहे। यह दसवें घंटे के लगभग था।

यूहन्ना 11:40 यीशु ने उस से कहा, "... यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?"

लूका 4:18 यीशु अंधों को दृष्टि देने के लिए आया।

यीशु ने हम सबसे कहता है : आओ और देख लो"। यह बिलकुल सच है।

यीशु को देखने की प्रेरणा के साथ यत्न से यीशु का अनुसरण करने का एक अच्छा उदाहरण :

मत्ती 9:27 - 30 जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तो **दो अंधे** उसके पीछे यह चिल्लाते और पुकारते हुए चले, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!" (28) और जब वह घर में प्रवेश कर चुका तो वे अंधे उसके पास आए। यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूं?" उन्होंने उस से कहा, "हां, प्रभु।" (29) तब उसने यह कहते हुए उनकी आंखों को स्पर्श किया, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो जाए।" (30) और **उनकी आंखें खुल गईं।**

लूका 24:13 -35 इम्माऊस के रास्ते पर दो लोग
(15) यीशु स्वयं वहां **आकर** उनके **साथ** चलने लगा, (16) परन्तु **उसे पहचानने को उनकी आंखें बन्द कर दी गई थीं।** (17) उसने उनसे कहा, "तुम चलते हुए परस्पर ये सब क्या बातें कर रहे हो?" (27) तब उसने मूसा से प्रारम्भ करके सब नबियों और समस्त पवित्र शास्त्र में से अपने सम्बन्ध की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया। (28) जब वे उस गांव के निकट पहुँचे जहां जा रहे थे तो उसने ऐसा दिखाया मानो कि आगे बढ़ जाना चाहता हो। (29) **उन्होंने आग्रह कर के कहा**, "**हमारे साथ ठहर जा**, क्योंकि सन्ध्या हो रही है और दिन लगभग ढल चुका है।" वह उनके साथ ठहरने के लिए भीतर गया। (30) तब ऐसा हुआ कि जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद दिया, और तोड़कर उन्हें देने लगा। तब **उनकी आंखें खुल गईं** और उन्होंने उसे पहचान लिया।

यूहन्ना 9 जन्म के अंधे व्यक्ति की चंगाई। पद 7 जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।

- आओ और देख लो -

यूहन्ना 1:40 - 51 उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक तो शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। (41) **उस ने पहिले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर** उस से कहा, कि हम को ख्रिस्त अर्थात् मसीह मिल गया। (42) **वह उसे यीशु के पास लाया**:

- जो लोग प्रभु की उपस्थिति में समय बिताते हैं, वे **आनंद से** अन्य लोगों को ढूंढते और उन्हें बताते हैं।

(43) दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा; और **फिलिप्पुस** से मिलकर कहा, **मेरे पीछे हो ले।** (44) फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। (45) **फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर** उस से कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, **वह हम को मिल गया**; वह यूसुफ का पुत्र, **यीशु नासरी** है।

(46) **नतनएल** ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से कहा, **चलकर देख ले।** (47) यीशु ने **नतनएल को अपनी ओर आते देखकर** उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच इस्त्राएली है: इस में कपट नहीं। (48) नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे कहां से जानता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया; उस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब **मैं ने तुझे देखा था।**

इससे पहले कि आप उसे देखते, **उसने आपको देख लिया** था। वह अपनों की निगरानी करता है।

उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया। इफिसियों 1:4

(49) **नतनएल** ने उस को उत्तर दिया, कि हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्त्राएल का महाराजा है। (50) यीशु ने उस को उत्तर दिया; मैं ने जो तुझ से कहा, कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिये विश्वास करता है? **तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा।** (51) फिर उस से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते **देखोगे।**"

पद 50 में आपके लिए एक **वायदा** है : जितना अधिक आप उसके साथ समय बिताएँगे, उतना ही अधिक आप **बड़े बड़े काम** देख पाएँगे ... स्वप्न / दर्शन / प्रकाशन

- हमारा चुनाव : बड़े बड़े **काम** ... या ... इस संसार की **बातें**

हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी **मेरे साथ** हों, **कि वे मेरी उस महिमा को देखें** जो तू ने मुझे दी है। यूहन्ना 17:24

देखो, आज ही वह उद्धार का दिन है। 2 कुरि 6:2

- ताकि आप यह निर्णय लें कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है।
- ताकि आप यह निर्णय लें कि आप क्या खोजेंगे
- ताकि आप अपनी प्राथमिकताओं की दिशा बदलें

यह ऐसा है मानो, हमारे पास अपना पासपोर्ट है - हमारे पास अपना टिकट है - हमें नए और ऊंचे स्थानों पर जाने के लिए टर्मिनल में प्रवेश भी मिल गया है - लेकिन ...

यह ऐसा है मानो हम एअरपोर्ट पर समान रखने के हिंडोले (BAGGAGE CAROUSEL) पर बैठकर गोल गोल घूम रहे हों। और उन सभी दुखों और निराशाओं के साथ - अपने अतीत के सारे सामानों को इकट्ठा करके - और उन सभी वस्तुओं को देखकर हम आगे बढ़ने से रुक रहे हैं।

यीशु ऊपर स्वचालित सीढ़ियों पर खड़ा होकर हमें ऊपर आने के लिए बुला रहा है > एक अलग संसार में

ताकि हम आकर उसके साथ उड़ जाएँ। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें और वहां रहें। जहाँ सारी **वस्तुएँ** हमें मिलेंगी ... और बड़ी बड़ी काम हमें दिखाई देंगी।

यीशु के लिए उसे छोड़ दें / त्याग दें / पीछे फेंक दें / दूर हो जाएं। अपने ध्यान केंद्र को बदले / अपनी खोज को बदलें / अपनी प्राथमिकताओं को बदलें।

मत्ती 11:28 - 30 "हे सब **परिश्रम करनेवालो** और **बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ**; मैं तुम्हें **विश्राम** दूँगा। मेरा जूआ (संसार का नहीं) अपने ऊपर उठा लो, और **मुझ से सीखो**; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।"

अत: इसमें एक बात की ज़रूरत है - हमें "कँटीली झाड़ी" को काटना है ताकि हम उसके साथ समय बिता सकें।

उसके साथ समय बिताने का आरम्भ तब होता है जब हम उसके कहे गए वचनों में समय बिताते हैं।

> भजन संहिता 1 क्या ही **धन्य** है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर **नहीं चलता**, और न पापियों के मार्ग में **खड़ा होता**; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में **बैठता** है। (क्रम पर ध्यान दें : चलना, खड़ा होना, बैठना) (2) परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से **प्रसन्न रहता**; और उसकी **व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता** है। (3) वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में **फलता** है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये **जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।।**

यीशु के साथ **घनिष्ठ** सम्बन्ध के लिए **सुनना** और **बोलना** बहुत ज़रूरी और अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसके लिए **इच्छा - खोज** - प्रभु के साथ **संगति** की आवश्यकता है।

यीशु मनुष्य बना - हम में से एक की तरह रहा - तो ...

उसने अपने पिता के साथ कब संगति की ???

> मरकुस 1:35 **भोर को जब अन्धेरा ही था** वह उठा और बाहर निकल कर एकान्त में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।

1. **वह समय जो यीशु चाहता है - भोर का समय**

2. **वह अपनी शिक्षा कब आरंभ करता था?**
   लूका 21:38 और **भोर को तड़के** सब लोग उसकी **सुनने के लिये** मन्दिर में उसके पास आया करते थे।

3. पुनरुत्थित यीशु को **सबसे पहले देखने वाली**?
   यूहन्ना 20:1 और 14 सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी **भोर को अंधेरा रहते ही** कब्र पर आई

4. **आदम के साथ परमेश्वर कब चलता था**?
   उत्पत्ति 3:8 फिर उन्हें **दिन के ठंडे समय** वाटिका में यहोवा परमेश्वर के चलने का शब्द सुनाई दिया

5. **मन्ना का पाठ**
   निर्गमन 16:12-14, 18, 21 और **भोर को** तुम **रोटी** से तृप्त हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

   - यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया : हे पिता ... 'हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर। लूका 11:3

   - यूहन्ना 6:35 यीशु ने उनसे कहा, "**जीवन की रोटी मैं हूँ** : जो मेरे पास **आता** है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर **विश्वास करता** है वह कभी प्यासा न होगा।

(16) **प्रत्येक जन** अपनी **आवश्यकता के अनुसार** खाने के लिए बटोर ले।
(18) न तो अधिक बटोरने वाले का अधिक, और न कम बटोरने वाले का कम निकला। प्रत्येक मनुष्य ने अपने खाने के अनुसार ही बटोरा।

- आप "जीवन की रोटी" जितनी चाहे ले सकते हो

(19) मूसा ने उनसे कहा, "कोई भी व्यक्ति भोर तक इसमें से कुछ न रख छोड़े।" (20) परन्तु उन्होंने मूसा की बात न मानी, वरन् कुछ ने उसमें से भोर के लिए रख छोड़ा, अत: उसमें कीड़े पड़ गए और वह सड़ गया। इस पर मूसा उन पर क्रोधित हुआ। (21) **और वे भोर को अपने अपने खाने के अनुसार प्रतिदिन बटोर लेते थे; परन्तु धूप तेज़ होते ही वह गल जाता था।**

6. **धूप की वेदी।** धूप हमारी प्रार्थनाओं को दर्शाती है।

निर्गमन 30:7-8 और उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप **जलाया करे**; **प्रतिदिन भोर को** जब वह दीपक को ठीक करे तब वह धूप जलाए ... यह धूप यहोवा के सामने तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में नित्य जलाया जाए।

प्रकाशितवाक्य 8:3-4 फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिये हुए आया, ... और उसको बहुत **धूप दिया गया** कि सब पवित्र लोगों की **प्रार्थनाओं** के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है चढ़ाएँ। (4) उस धूप का धुआँ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच गया।

7. **याजक आग को पूरी तरह जलाए रखता था।** लैवव्यवस्था 6:12-13 **वेदी पर अग्नि जलती रहे**, और **कभी बुझने न पाए**; और **याजक प्रतिदिन भोर को उस पर लकड़ियाँ जलाकर** होम बलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजाकर धर दे, और उसके ऊपर मेल बलियों की चरबी को जलाया करे। (14) **वेदी पर आग लगातार जलती रहे; वह कभी बुझने न पाए।**

   मत्ती 3:11 वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।

8. **प्रथम फल परमेश्वर का है।** नीतिवचन 3:9 अपनी सारी उपज के प्रथम फल से तथा अपनी सम्पत्ति के द्वारा यहोवा का आदर करना।

9. **दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार था। क्यों?**

   भजन संहिता 5:3 हे यहोवा, **भोर को** मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं **भोर को** प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा।

   भजन संहिता 57:8 हे मेरे प्राण, जाग उठ! हे सारंगी, हे वीणा, जाग उठो! मैं **भोर को भी जगा** उठाऊंगा।

   भजन संहिता 63:1 हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, **मैं तुझे भोर को ढूँढ़ूँगा**; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

   भजन संहिता 90:14 **भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर**, कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें।

   भजन संहिता 119:147 **भोर होने से पहले ही उठकर मैं** सहायता के लिए तुझे पुकारता हूं; मैं तेरे वचनों की **आस** लगाए हूं।

10. **श्रेष्ठगीत 7:12 आओ हम सवेरे जल्दी उठें ...**

    श्रेष्ठ गीत 7:12 **फिर सबेरे उठकर** दाख की बारियों में चलें, और देखें कि दाखलता में कलियाँ लगी हैं कि नहीं, कि दाख के फूल खिले हैं या नहीं, और अनार फूले हैं या **नहीं। वहाँ मैं तुझ को अपना प्रेम दिखाऊँगी।**

वह आपको बगीचे में बुला रहा है ... वह हर सुबह आपके साथ चलना चाहता है, जैसे वह आदम और हव्वा के साथ चलता था।

वह आपको अपना प्रेम देना चाहता है। आप कैसे जवाब देंगे?

आप क्या करेंगे? आप क्या चाहते हैं?

वह हर सुबह आपका इंतज़ार करता है।

आपके लिए मेरी प्रार्थना : इफिसियों 1:15 - 21

इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम लोगों का प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों पर प्रकट है, (16) तुम्हारे लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूं (17) कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाशन का आत्मा दे। (18) और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों ताकि तुम जान लो कि उसके बुलाने से क्या आशा उत्पन्न होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन क्या है। (19) और उसका सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितना महान है।